International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 09, September 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

''हनुमानगढ़ शहर का नगरीय विस्तार पर्यावरण के सन्दर्भ में''

डॉ0 सरोज कुमारी

एम.ए.,पीएच.डी., भूगोल

प्रस्तावित शोध की प्रस्तावना

नगरों का उद्भव सबसे पहले कब हुआ, इसे ज्ञात करने के लिए आर्थिक कारणों की ओर ही ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि हमें मानव की सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक भावनाओं की ओर भी ध्यान देना चाहिए। नगरों से पहले पुरवों, गाँवों व श्रद्धा–स्थलों का जन्म हुआ। गाँवों के बनने से पूर्व मानव के रहने का स्थान कैम्प, छिपने का विशेष स्थान गुफा के रूप में था लेकिन इन सबसे पहले मानव की सामाजिक व्यवस्था का स्थान था कि वह प्रारम्भ में किस तरह रहता था।[1] नगर सबसे पहले कब स्थापित हुए इस बारे में एक मिस्री लेखक का कहना है कि नगरों को स्थापित करने का उद्देश्य ईश्वर को श्रद्धा–स्थलों के रूप में सजाना था।[2] प्रारम्भ में नगरों की विशेषता व स्वरूप पर जितना प्रभाव सामाजिक व धार्मिक बातों का पड़ा, उतना भौगोलिक व आर्थिक बातों का प्रभाव नहीं पड़ा था। नगर मानव बुद्धि की अभिव्यक्ति है तथा उसके व्यक्तित्व के सभी गुणों, चाहे वह सामाजिक हों या आर्थिक, धार्मिक हों या राजनीतिक की छाप उस पर पड़ी दिखाई देती है।[3] नगर अपना विकास करते समय ऐसी शक्तियों को तैयार करता है जो उसके निर्माण में सहायक होती हैं।

लेविस ममफोर्ड के अनुसार, 'नगर उस स्थायी जीवन का चिन्ह है जबकि कृषि ने स्थायी रूप ग्रहण किया। यह स्थायी आवासों, स्थायी उपयोगिताओं जैसे बागात, अंगूर–बागात तथा सिंचाई कार्यों की सहायता से आरम्भ हुआ। स्थायी आवासों का प्रयोग सामान रखने तथा सुरक्षा की दृष्टि से किया गया है इन बस बातों से स्पष्ट है कि जब मनुष्य में एक–साथ मिलकर रहने की भावना जागृत हुई तब से उसने स्थायी रूप से एक स्थान पर रहना शुरू किया।इस स्थान पर वह झुण्डों में रहने लगा। इस झुण्ड को गाँव कहा जाने लगा। गाँव का दुर्ग पूजास्थल बन गया। इस स्थान पर लोग पूजा व सभा करने लगे तथा यह व्यापार का भी केन्द्र बन गया। इन ग्रामों ने आदिम मानव जीवन में नयी जागृति पैदा कर दी। यह पारस्परिक सहयोग व उत्तरदायित्व की भावना को सीखने लगा। इन भावनाओं से मानव ने कुछ समान उद्देश्यों व लक्ष्यों को पेदा कर दिय और ये सब एक समाज तथा सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हुए।

जो उत्तरदायित्व मानव ने संभाले वह उनको अधिक समय तक नहीं निभा सका। वह अपने आदिम स्वभाव में परिवर्तन तेजी से नहीं कर सका। उसकी रहने की स्वच्छन्द

नीति ने गाँव में आपस में एक–दूसरे के बीच शत्रुता की भावना जागृत करने में योग दिया। गाँव का शक्तिशाली व्यक्ति उसका नेता बन गया। गाँव के बीच आपस में भी शत्रुता की भावना फैल जाने से गाँव के चारों ओर दीवारें बना दी गयीं। जब कई गाँवों को मिलाकर एक साम्राज्य का जन्म हुआ। इस साम्राज्य को शासित करने वाला राजा या बादशाह कहलाया।

प्रस्तावित शोध के सोपान

संसार के राष्ट्र नगर की परिभाषा पर एकमत नहीं हैं, न इस बात पर उनके कभी एकमत होने की आशा ही की जा सकती है। नगर उतने पुराने है, जितनी सभ्यता, फिर भी इसका व्युत्पत्तिमूलक समगुण एक ऐसी सच्चाई को प्रकट करता है जिसको सही तरह से पहचाना नहीं जा सका है।

अनेक भूगोवेत्ताओं ने नगर को परिभाषित करने की चेष्टा की है। फ्रैडरिक रेटजेल ने नगर को एक लगातार और घना, लोगों एवक मकानों का ऐसा जमघट कहा है जिसके अन्तर्गत विस्तृत भूमि हो और वहाँ वृहद् व्यापारिक मार्गों का संगम हो। उनके अनुसार नगर के लोगों का जीवन वाणिज्य एंव उद्योग पर आधारित होता है जबकि गाँवों में मकानों की सघनता नहीं होती। उनका कहना है कि 2000 से कम आबादी की बस्ती नगर का रूप ग्रहण नहीं कर पाती। वेगनर ने नगर को मानव वाणिज्य का सान्द्रण बिन्दु का है। वान रिक्टोफेन के अनुसार, नगर के अन्तर्गत एक ऐसा सुव्यवस्थित वर्ग निहित है, जहाँ का मुख्य धन्धा वाणिज्य और उद्योग से सम्बन्धित होता है और से धन्धे कृषि कार्यों से सर्वथा भिन्न होते हैं।[18] इस प्रकार नगर को उद्योग की प्रधानता वाला बताया गया है। क्रिस्टलर एवं रूसो ने भी नगर को उद्योग का संगठित समूह माना है। रूसो के अनुसार, 'नगर वह बस्त है जिसमें रहने वाले लोगों को अपने भोजन के लिए अनाज और कपड़ों के लिए सूती, ऊनी, रेशमी रेशा उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु वे लोग तो इन चीजों को इधर से उधर ढ़ोने, इन वस्तुओं से तैसार माल बनाने, इन वस्तुओं को खरीदने–बेचने, लोगों को सिखाने–पढ़ाने, राजकाज चलाने और इसी तरह के अन्य कार्यों में लगे रहते हैं।

आर.फ्रीडमैन के अनुसार नगर की प्रकृति को केवल जनसंख्या के आँकड़ों के आधार पर समझा नहीं जा सकता। यह एक अत्याधिक जटिल प्रघटना है जिसमें इसके अंतर्गत रहने वाले लोगों के जीवन तथा आस–पास के क्षेत्र में होने वाले क्रियाकलापों के विभिन्न पक्ष सन्निहित हैं। यह अत्यधिक घना बसा क्षेत्र होता है जिसमें ऐसे कार्य करने वाले लोगों का जमघट होता है जो अपने कार्यों द्वारा अन्य क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोगों के साथ सामंजस्य या सम्बन्ध स्थापित कर लेते है। प्रोफेसर वाइडल डि ला ब्लाश ने बताया है कि 'नगर सामाजिक संगठन वाला व्यापक क्षेत्र होता है। यह सभ्यता की उस

पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जिस तक कुछ नहीं पहुँच पाये हैं और जो सम्भवतः कभी पहुँच भी न सके।

प्रस्तावित शोध का महत्व

प्रत्येक नगर एक–सा नहीं होता। वह उत्पत्ति, स्थिति, आकार, कार्यों, गठन आदि दृष्टि से कुछ न कुछ परस्पर भिन्नता रखता है। नगरों का वर्गीकरण विविध सूचनाओं को संकलित करने का माध्यम है। यह समान विशेषताएँ रखने वाले तत्त्वों को समूहबद्ध बनाने का तरीका है। नगरीय अध्ययन में इन वर्गीकरणों का बड़ा महत्त्व है। यह सामान्य विशेषताओं के साथ–साथ गहन बातों का भी परिचय देते हैं नगरों का वर्गीकरण सर्वप्रथम उत्पत्तिमूलक अथवा आनुवंशिक होता है। नगर कब उदित हुए, विभिन्न कालों में उनकी क्या विशेषताएँ थी, आदि बातों का ज्ञान अस वर्गीकरण का बड़ा महत्त्व है। यह सामान्य विशेषताओं के साथ–साथ गहन बातों का भी परिचय देते हैं। नगरों का वर्गीकरण सर्वप्रथम उत्पत्तिमूलक अथवा आनुवंशिक होता है। नगर कब उदित हुए, विभिन्न कालों में उनकी क्या विशेषताएँ थी, आदि बातों का ज्ञान इस वर्गीकरण से प्राप्त होता है। ग्रिफिथ टेलर ने नगरों के विकास के कालक्रम को ध्यान में रखते हुए इसे पाँच वर्गों में रखा हैं– (i) प्रागैतिहासिक नगर, (ii) प्राचीन साहित्यिक नगर (iii) रोमन नगर, (iv) मध्ययुगीन नगर, (v) वर्तमान नगर। नगरों का स्थिति अथवा बसाव स्थान के आधार पर भी वर्गीकरण बड़ा महत्त्वपूर्ण है। यह नगर के विकास की भौतक दशाओं का परिचय देता है, जैसे मैदानी नगर, पर्वतीय नगर, नदी के किनारे स्थित नगर, बन्दरगाह या समुद्र तटीय नगर आदि।

गठन पर आधारित वर्गीकरण नगर के क्षेत्रीय फैलाव प्रतिरूप से सम्बन्ध रखता है। यह द्वि–विमीय रूप पर विशेष जोर देता है। नगर की धरातलीय आकृति को ध्यान में रखकर नार्थम ने नगरों की चार प्रकार की गठन आकृतियों के बारे में बताया है– (i) सघन रूप, (ii) रेखीय रूप, (iii) विखण्डित रूप मार्गों द्वारा जुड़ा हुआ तथा, (iv) संयुक्त रूप। निम्नांकित चित्र द्वारा इन रूपों के बारे में स्पष्ट पता लगता है।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य

1961 के बाद नगरीय जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। इन चालीस वर्षो में यह वृद्धि पिछले साठ वर्षो से भी काफी अधिक है। 1901 से 1961 के वर्षो में नगरीय जनसंख्या में कुल वृद्धि 53.1 मिलियन की हुई, जबकि 1961–01 के 40 वर्षो में यह 206.6 मिलियन बढ़ गई। नगरीय जनसंख्या का कुल जनसंख्या में प्रतिशत 18 से बढ़कर 27. 28 तक पहुंच गया। इस अतिशय वृद्धि के पांच प्रमुख कारण हैं–

(1) देश में भारी संख्या में उद्योगों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना ।

(2) लोगों, विशेषकर ग्रामीण लोगों का नगरों की ओर आकृषित होना।

(3) अनेक ग्रामीण बस्तियों का नगरीय दर्जा प्राप्त करना।

(4) नये–नये नगरों का निर्माण होना।

(5) वर्तमान नगरों द्वारा अपने आकार में भारी वृद्धि करना, विशेष रूप से वृहद् महानगरों द्वारा।

1941–51 व 1971–81 की दशाब्दियों में नगरीय जनसंख्या में सबसे अधिक प्रतिशत वृद्धि 41 व 46 प्रतिशत मिलती है। भारत पाकिस्तान का विभाजन होने से लाखों विस्थापित परिवार नगरों में आकर बस गये। 1941–61 के बीस वर्षो में देश में औद्योगिक की आधारशिला रखी गयी, लेकिन नगरीय जनसंख्या की प्रतिशत वृद्धि बढ़ने के बजाए और घट गयी।

लेकिन फिर भी यह अनुमान लगाया जाता है कि नगरीय जनसंख्या में वृद्धि की दर भी उतनी है जितनी की देश की पूरी जनसंख्या की वृद्धि की दर हैं यह वृद्धि की दर 2.0 प्रतिशत वार्षिक है। कितनी ग्रामीण जनसंख्या नगरों में आकर बस गयी है, इस बारे में विद्वानों के अलग–अलग विचार हैं। ग्रामों से नगरों में आने वाली जनसंख्या 8.2 मिलियन से लेकर 10.2 मिलियन तक आंकी गयी है। इनमें 2 मिलियन वह व्यक्ति शामिल नहीं है जो 1941–51 के दशक में पाकिस्तान से भारत आकर बस गये। डी.जे. बोग ने ग्रामों से नगरों में आने वाले लोगों की संख्या 9 मिलियन तक बतायी है। इस प्रकार इतना तो स्पष्ट है कि ग्राम से नगरों की ओर जनसंख्या का पलायन काफी प्रभावपूर्ण रहा है।

1981 की जनगणना से प्राप्त प्रारम्भिक आंकड़ों के अनुसार नगरीय जनसंख्या का कुल प्रतिशत 23.73 है। इसमें असम व जम्मू–कश्मीर के आंकड़े शामिल नहीं है। इस वर्ष प्रथम बार दादरा एवं नागर हवेली ओर लक्षद्वीप की जनसंख्या में शामिल किया गया। चण्डीगढ़ और दिल्ली केन्द्र शासित राज्यों में सबसे अधिक नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत रखने वाले राज्य है – चण्डीगढ़ में 93.60 प्रतिशत तथा दिल्ली में 92.84 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है। वास्तव में यह दोनों केन्द्र शासित प्रदेश एक तरह से नगर ही है। लक्षद्वीप की 46.21 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय होने का कारण प्रदेश की तीन बस्तियों को नगरों की परिभाषा में शामिल कर लेना है। साथ–साथ यहां पर कुल जनसंख्या का भी कम होना है। पांडीचेरी, गोआ, मिजोरम व अण्डमान–निकोबार द्वीप समूहों की जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत देश के औसत प्रतिशत से अधिक मिलता है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

1. शहर के राजनैतिक और भौतिक पर्यावरण पर शहर के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. हनुमानगढ़ के शहरीकरण की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन करना।
3. हनुमानगढ़ के नगरीयकरण की राजस्थान के अन्य नगरों के नगरीकरण से तुलना करना व अध्ययन करना।
4. नगरीकरण के गुण व अवगुण को जानना।
5. प्रस्तुत अध्याय में नगरीकरण के वितरण तथा उसके प्रभावों का उल्लेख किया गया हैं।
6. प्रस्तुत शोध में नगरीकरण संरचना का गत दशक की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- सिन्हा, बी.सी. एवं सिन्हा, पुष्पा (1995):जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर पेपर बैक्स,नोएडा।
- पंडा, बी.पी. (1988) :जनसंख्या भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल,
- Aggarwal, S.N. (1977): India's Population Problem, Me GrawHill,New Delhi,
- Beaujeu Garnier, Bogue, D. (1978): Geography of Population, Longman,London,
- Bhattacharya,P.T. (1976): Population in India - A Study of Inter-state Variations, New and Shastri, G.N.Delhi,
- Bose, A. (1970): Urbanization in India - An Inventory ofSource Materials, Academic Books Ltd., New Delhi,
- Davis, Kingsley (1951):Population of India and Pakistan Princeton University, Princeton,
- Desai, A.J. & Pillai, S.D. (1976): Slums and Urbanization PopularPrakashan, Bombay,
- Geddes Arthur (1941): Half a Century of Population Trends in India- ARegional Study of Net Change and Variability, 1881-1931, TheGeographical Journal Vol. 48,